पंचम

अध्याय

परिणाम एवं व्याख्या

पंचम – अध्याय
परिणाम एवं व्याख्या

5.1.0 भूमिका

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का उद्देश्यवार सांख्यिकी विश्लेषण तथा परिणाम एवं निष्कर्ष पर प्रकाश डाला गया था। पंचम अध्याय में इन निष्कर्षो की उद्देश्यवार व्याख्या की गयी है।

5.2.0 विद्यार्थियों की भाषागत का परिणाम एवं व्याख्या

5.2.1 विद्यार्थियो की भाषागत योग्यताओं का परिणाम एवं व्याख्या

उद्देश्य क्रं.1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने का अध्ययन करना।

परिकल्पना H0–1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष–'t' का गणना द्वारा प्राप्त मान 2.500 पाया गया जो 98df पर 't' के .05 स्तर के सारणी मान 1.99 से कम है। अतः दोनों समूहों मदरसा तथा सृजनात्मकता के विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः उर्पयुक्त परिकल्पना विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

व्याख्या– प्रस्तुत लघुशोध में विद्यार्थियों की भाषागत योग्यताओं पर प्रभाव पाया गया है जबकि **कौसर सालेहा (2012)** "माध्यमिक स्तर के विद्यालयों एवं मदरसों के विद्यार्थियों की उर्दू ,गणित एवं विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अच्छा है। **कपूर मनोज (1998)** भोपाल के "शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक शालाओं की कक्षा–2 के विद्यार्थियों की सीखना–सिखाना पैकेज के अन्तर्गत भाषा

गणित एवं पर्यावरण अध्ययन विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन" शहरी बालक तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषा गणित तथा पर्यावरण विषय में उपलब्धि समान होती है। तथा शहरी बालक तथा बालिकाओं की भाषा गणित तथा पर्यावरण विषय में उपलब्धि समान होती है। और गणित तथा पर्यावरण अध्ययन में उपलब्धि का भाषा की उपलब्धि के साथ धनात्मक सह–सबंध होता है। अतः वर्तमान शोध के परिणाम पूर्व शोध परिणाम से समानता रखते है।

5.2.2 विद्यार्थियो की भाषागत एवं सृजनात्मकता के परिणाम एवं व्याख्या

उद्देश्य क्रं. विद्यार्थियों की भाषागत एवं सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना H_0–2 विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्षः– 't' का गणना द्वारा प्राप्त मान 2.630 पाया गया जो 98 df पर 't' के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.99 से अधिक है। अतः दोनों समूहों मदरसा तथा सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः उर्पयुक्त परिकल्पना विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

व्याख्या– प्रस्तुत लघुशोध में विद्यार्थियों **जैन संध्या (2011)** "सर्वाशिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण का रायसेन जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजानात्मकता के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन" ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है और दोनों शैक्षणिक उपलब्धि समान है। एवं ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजनात्कता में धनात्मक सह–सम्बंध है।

5.2.3 विद्यार्थियो की विद्यालय समायोजनशीलता का परिणाम एवं व्याख्या।

उद्देश्य क्रं.3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना H_0–3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सह–संबंध नहीं है।

निष्कर्ष– 'r' का गणना द्वारा प्राप्त मान 0.0196 पाया गया। जो कि 'r' के 98 df पर 0.05 स्तर के सारणीमान 0.065 से कम पाया गया। अतः विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों की भाषागत एवं सृजनात्मकता में सार्थक सह–संबंध नहीं है।

व्याख्या– प्रस्तुत लघुशोध में विद्यार्थियों की **जायसवाल, शुक्ला (2009)** ने संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों का सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों–स्व–सचेतता, परानुभूति, स्व–अभिप्रेरणा, सांवेंगिक स्थिरता, सम्बंधों का प्रबंधन, सत्यनिष्ठा, स्व–विकास, मूल्योन्मुखता, वचनवद्धता तथा परोपकारिता का वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है और यह भी पाया गया कि छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का विकास करके उनकी वैज्ञानिक सृजनात्मकता में कुछ मात्रा तक वृद्धि की जा सकती है। **पेसवानी, रितु (2011) ने** माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता एवं उनकी अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। माध्यमिक स्तर के शिक्षक/शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नही है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है। अतः वर्तमान शोध के परिणाम पूर्व में किए गए शोध के परिणामों से समानता रखते है।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय मे उद्देश्यवार परिकल्पनाओं की सांख्यिकीय जाँच कर निष्कर्ष दिये गये है साथ ही उद्देश्यवार निष्कर्षो की विवेचना की गयी है। विवेचना करते समय पूर्व में किये गये शोध निष्कर्षो के साथ वर्तमान शोध निष्कर्षो का तुलनात्मक विवरण दिया गया है। प्राप्त निष्कर्षो के संभावित कारण भी शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

======***======